परीक्षणात्मक शोध / प्रयोगात्मक शोध
Experimental Research

सामाजिक शोध-अध्ययनों में कई आधारों पर भिन्नता पायी जाती है। कुछ शोध-कार्य किसी जिज्ञासा को शान्त करने की दृष्टि से तो कुछ केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए किये जाते हैं, कुछ प्राक्कल्पना की सत्यता की जाँच के लिए तो कुछ प्राक्कल्पना निर्माण हेतु। किसी शोध का लक्ष्य किसी घटना का यथार्थ चित्रण करना, किसी का सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु विकल्पों का पता लगाना तथा कुछ का सामाजिक नियोजन एवं नियोजित परिवर्तन की आवश्यकता का पता लगाना और समाज कल्याण व विकास कार्यक्रमों के सफल संचालन में योग देना है। इन विभिन्न लक्ष्यों या प्रयोजनों के आधार पर सामाजिक शोध या अनुसन्धान के कई प्रकार हैं। इन्हीं में एक प्रयोगात्मक अथवा परीक्षणात्मक शोध है।

जिस प्रकार भौतिक विज्ञानों में विषय को नियन्त्रित अवस्थाओं में रखकर उसका अध्ययन किया जाता है, उसी प्रकार नियन्त्रित अवस्थाओं में अवलोकन-परीक्षण के द्वारा सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने को ही परीक्षणात्मक शोध कहते हैं। इस प्रकार के शोध में सामाजिक घटनाओं के कुछ पक्षों या चरों को नियन्त्रित कर लिया जाता है और शेष चरों पर नवीन परिस्थितियों के प्रभाव का पता लगाया जाता है। इस प्रकार के शोध द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि किसी समूह, समुदाय, सामाजिक तथ्य, सामाजिक घटना, आदि पर किसी नवीन परिस्थिति का कैसा और कितना प्रभाव पड़ा है। यहाँ नियन्त्रित दशा में प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार के शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए चेपिन ने बताया — प्रयोग नियन्त्रित दशाओं में किया जाने वाला अवलोकन मात्र है। जब केवल अवलोकन किसी समस्या को प्रभावित करने वाले कारकों का पता

जाने में असफल रहता है, तब वैज्ञानिक के लिए प्रयोग का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है।

स्पष्ट है कि प्रयोगात्मक या परीक्षणात्मक शोध का सामाजिक विज्ञानों में वही महत्व है जो भौतिक विज्ञानों में प्रयोगशाला पद्धति का है।

परीक्षणात्मक शोध तीन प्रकार के होते हैं—

पश्चात परीक्षण	पूर्व-पश्चात परीक्षण	कार्यान्तर/ऐतिहासिक-तथ्य परीक्षण

(1) पश्चात परीक्षण (After Experiment) →

इसमें सर्वप्रथम समान विशेषताओं एवं प्रकृति वाले दो समूहों को चुन लिया जाता है। इनमें से एक समूह नियन्त्रित समूह और दूसरा समूह परीक्षणात्मक के नाम से जाना जाता है। नियन्त्रित समूह में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन लाने का प्रयत्न नहीं किया जाता है, और किसी पर कारक या नवीन परिस्थिति द्वारा बदलने का प्रयास नहीं किया जाता। परीक्षणात्मक समूह में किसी नवीन परिस्थिति का प्रभाव नहीं पड़ने दिया जाता। कुछ समय पश्चात परीक्षणात्मक-समूह पर नवीन कारक या परिस्थिति के प्रभाव को मापा जाता है। यदि नियन्त्रित और परीक्षणात्मक दोनों ही समूहों में समान परिवर्तन आते हैं तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि नवीन कारक या परिस्थिति का परीक्षणात्मक-समूह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यदि नियन्त्रित-समूह की तुलना में परीक्षणात्मक-समूह में परिवर्तन अधिक होते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि नवीन परिस्थिति या कारक का प्रभाव पड़ा है। यहाँ उदाहरण के लिए में दो समान समूह या गाँवों को लिया जा सकता है। जिनमें बाल-विवाह का काफी प्रचलन है। इनमें से एक समूह में जिसे परीक्षणात्मक समूह मान लिया

गया है, बाल-विवाह के विरुद्ध काफी प्रचार-प्रसार किया जाता है। कुछ समय के बाद इस समूह की तुलना नियन्त्रित समूह से की जाती है जिसमें ऐसा कोई प्रचार-प्रसार नहीं किया गया। यदि बाल-विवाह के प्रचलन की दृष्टि से इन दोनों में अन्तर देखने को मिले और परीक्षणात्मक-समूह में बाल-विवाहों की मात्रा काफी कम हो जाये, तो इसे नवीन कारक अर्थात बाल-विवाह विरोधी प्रचार प्रसार का प्रभाव माना जायेगा।

(2) **पूर्व-पश्चात परीक्षण** (Before-after Experiment) → इस विधि के अन्तर्गत दो समूहों का चुनाव नहीं करके केवल एक ही समूह का चुनाव किया जाता है। यहां इस समूह का अध्ययन दो विभिन्न अवधियों में किया जाता है और पूर्व तथा पश्चात के अन्तर को ज्ञात किया जाता है। पूर्व और पश्चात किये गये अध्ययन के आधार पर यह मापा जाता है कि पूर्व की अवस्था और बाद की अवस्था में क्या अन्तर आया। यह अन्तर ही नवीन परिस्थिति या कारक का प्रभाव (परिणाम) है। उदाहरण के रूप में अध्ययन के लिए एक गांव को चुन लिया जाता है जहां परिवार-कल्याण कार्यक्रम के प्रभावों को मापा जाता है। एक अनुसूची की सहायता से यह पता लगा लिया जाता है कि गांव वालों ने इस कार्यक्रम को कहां तक स्वीकार किया है। यह पूर्व की स्थिति है जिसे अध्ययन की दृष्टि से हम प्रथम स्तर कह सकते हैं। फिर इस गांव में रेडियो, दूरदर्शन, ग्राम-सेवक, स्कूल अध्यापक, डाक्टर, नर्स आदि की सहायता से लोगों को परिवार कल्याण कार्यक्रम की अच्छाइयों से भली-भांति परिचित कराया जाता है। इस काल को उपचार-काल या द्वितीय स्तर के नाम से जाना जाता है। एक निर्धारित अवधि के पश्चात इस गांव का पूर्व में

February

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr
				1	2	3	4	5	6	7	8	9
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
25	26	27	28									

निमित अनुसूची की सहायता से पुनः अध्ययन किया जाता है। यह पश्चात की स्थिति है जिसे तृतीय स्तर माना जा सकता है। अब पूर्व की स्थिति और पश्चात की स्थिति में अन्तर ज्ञात हो जायेगा। पूर्व की बजाय अब यदि गाँव वाले परिवार-कल्याण कार्यक्रम को अधिक मात्रा में अपनाते हैं, स्वयं आगे आकर इस कार्यक्रम का लाभ उठाते हैं तो इसे उपचार-काल (द्वितीय स्तर) में किये गये प्रयत्न का परिणाम माना जायेगा।

③ **कार्यान्तर (ऐतिहासिक) - तथ्य परीक्षण (Ex-Postfact Experiment)** →

अतीत से सम्बन्धित तथ्यों या किसी ऐतिहासिक घटना का अध्ययन करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है। अतीत की घटनाओं को दोहराया नहीं जा सकता, उनकी पुनरावृत्ति शोध-कर्ता के लिए सम्भव नहीं है। उन्हें न तो नियन्त्रित किया जा सकता और न ही इनमें कोई परिवर्तन लाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में इस शोध-विधि को काम में लेते हुए प्राचीन अभिलेखों के भिन्न-भिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन करके महत्वपूर्ण निष्कर्षों तक पहुंचा जा सकता है, उपयोगी परिणाम निकाले जा सकते हैं। अभिलेखों की तुलना से महत्वपूर्ण परिणामों को मापना सम्भव हो पाता है। इस विधि द्वारा अध्ययन हेतु सामान्यतः दो ऐसे समूहों का चुनाव किया जाता है जिनमें से एक समूह में जिसका कि अब अध्ययन करना है, कोई ऐतिहासिक घटना घटित हो चुकी होती है एवं दूसरा ऐसा समूह जिसमें वैसी कोई घटना घटित नहीं हुई है। इन दोनों समूहों की पुरानी परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि एक समूह विशेष में उस घटना के घटित होने के क्या

23

February

2018

Friday ◆ WK 08 (054-311)

कारण है, कौन सी परिस्थितियों ने उस घटना के घटित होने में योग दिया है। इस विधि के द्वारा ऐतिहासिक घटना-चक्रों का पता लगाकर वर्तमान अवस्थाओं या घटनाओं के कारणों की खोज की जाती है।